बकरियों को बीमारी
से कैसे बचाएँ

यह प्लेबुक
किसके लिए है?

यह प्लेबुक इब्तिदा के विशेष ज्ञान के आधार पर तैयार की गई है, जो सामाजिक-आर्थिक रूप से कमज़ोर समुदायों और भूमिहीन/सीमांत किसानों को बकरियाँ पालने के लिए प्रोत्साहित करती है। इस प्लेबुक में प्रिंट करने लायक एक पोस्टर भी है जिसे बकरी पालक जानकारी याद रखने के लिए बकरी के बाड़े में लटका सकते हैं।

इस प्लेबुक को निम्नलिखित द्वारा अपनाया जा सकता है:
बकरी पालक, प्रशिक्षक, व्यवसायी, सामुदायिक संसाधन व्यक्ति

इस प्लेबुक की
क्या आवश्यकता है?

ग्रामीण, लघु और सीमान्तर समुदायों के लिए बकरी-पालन आमदनी का एक महत्वपूर्ण ज़रिया हो सकता है और इसके लिए महिलाओं को प्रोत्साहित किया जा सकता है। घर पर बंधी बकरियों की अच्छी देखभाल और उनको बीमारी से बचा कर रखने पर अच्छा लाभ मिल सकता है।

यह प्लेबुक इब्तिदा के विशेष ज्ञान के आधार पर तैयार की गई है, जो राजस्थान के सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित समुदायों तथा लघु एवं सीमान्तर/ मवेशियों और किसानों को बढ़ावा देते हैं। इस प्लेबुक में एक प्रिंट करने लायक पोस्टर भी है, जिसे बकरी पालक उपयोग कर सकते है और बकरियों के शेड में भी लगा सकते है।

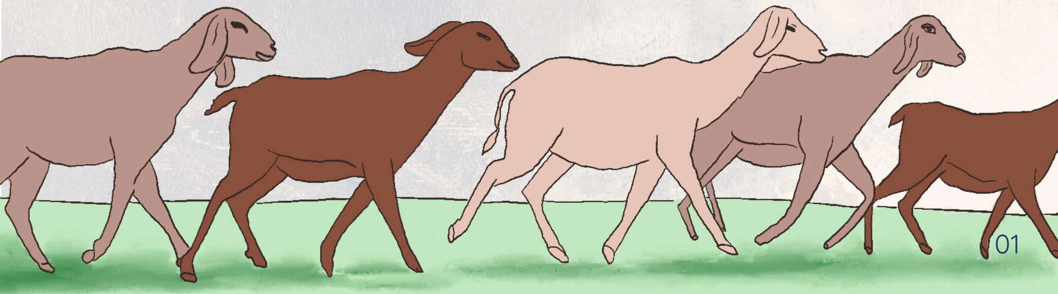

बकरी पालकों को

क्या फ़ायदे मिल सकते हैं?

01 बकरियों की मृत्यु दर में कमी आती है।

02 गर्भावस्था में वे स्वस्थ रहती हैं और उनके बच्चों की मृत्यु दर भी कम होती है।

03 बकरियों में मांसपेशियों का अच्छा विकास होता है और को बेचने पर आमदनी बढ़ती है।

04 बकरी का दूध एक मूल्यवान उत्पाद है जिसे अच्छी प्रथाओं से बेहतर बनाया जाता है।

05 प्रजनन संख्या में मदद होती है ।

पेट के कीड़े (कीड़ा नाशन): पहचानें और उपचार करें

बकरियों के पेट और पाचन नली में कीड़े होने से उनकी भूख मर जाती है और उनका वज़न गिरने लगता है।

पहचानने का तरीका

01 बदबूदार दस्त

02 आँखों में पानी आना

03 बाल झड़ना

04 वज़न गिरना, सुस्ती

05 जेड आना, खड़े होने

06 पेट लटकना, कमज़ोर होना

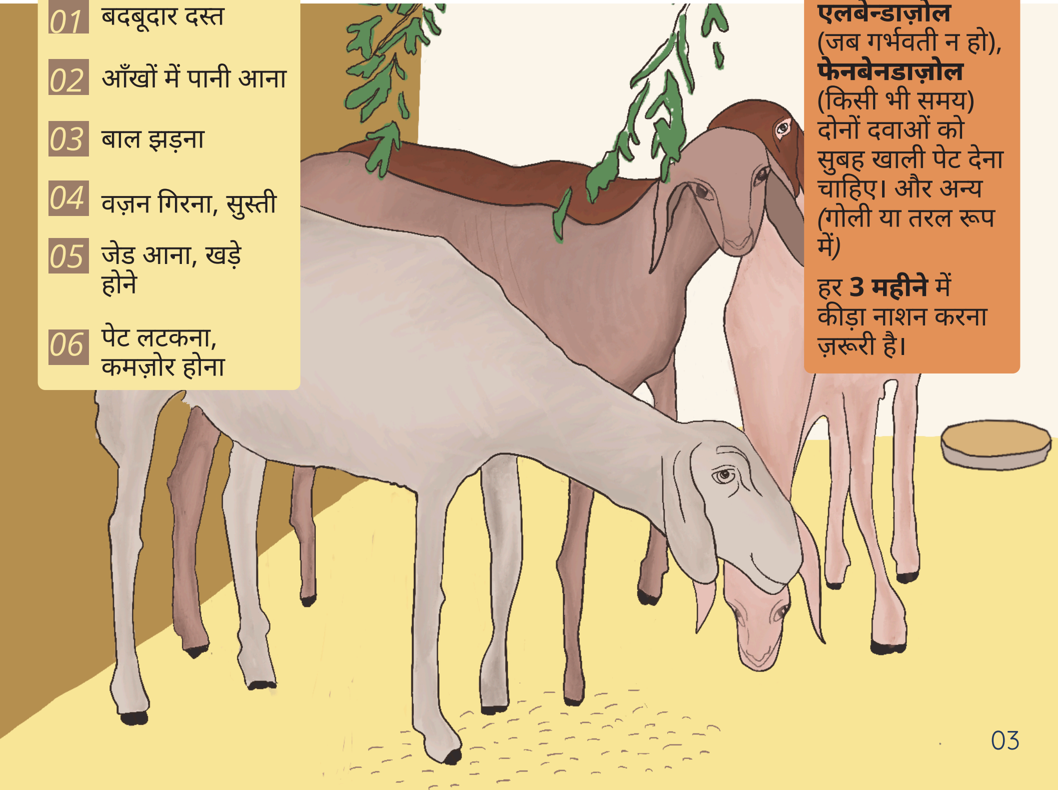

उपचार

एलबेन्डाज़ोल (जब गर्भवती न हो), **फेनबेनडाज़ोल** (किसी भी समय) दोनों दवाओं को सुबह खाली पेट देना चाहिए। और अन्य (गोली या तरल रूप में)

हर **3 महीने** में कीड़ा नाशन करना ज़रूरी है।

टीकाकरण चक्र

हर बीमारी का टीकाकरण चक्र अलग होता है। चूंकि पूरे झुंड में हर बकरी के बारे में पता लगाना मुश्किल है, इसलिए निर्धारित समय पर सभी बकरियों का टीकाकरण किया जाना चाहिए।

नोट

- सिर्फ **स्वस्थ बकरियों** का टीकाकरण किया जाना चाहिए।
- **झुंड** की सभी स्वस्थ बकरियों का टीकाकरण होना चाहिए। एक भी बकरी को टीका न लगाने के कारण, बीमारी फैल सकती है।
- टीकों से रोग प्रतिरोधक क्षमता बनने में **21 दिन** लगते हैं। इस बीच, अगर किसी भी बकरी में बीमारी के लक्षण दिखते हैं, उसे झुंड से अलग कर देना चाहिए।

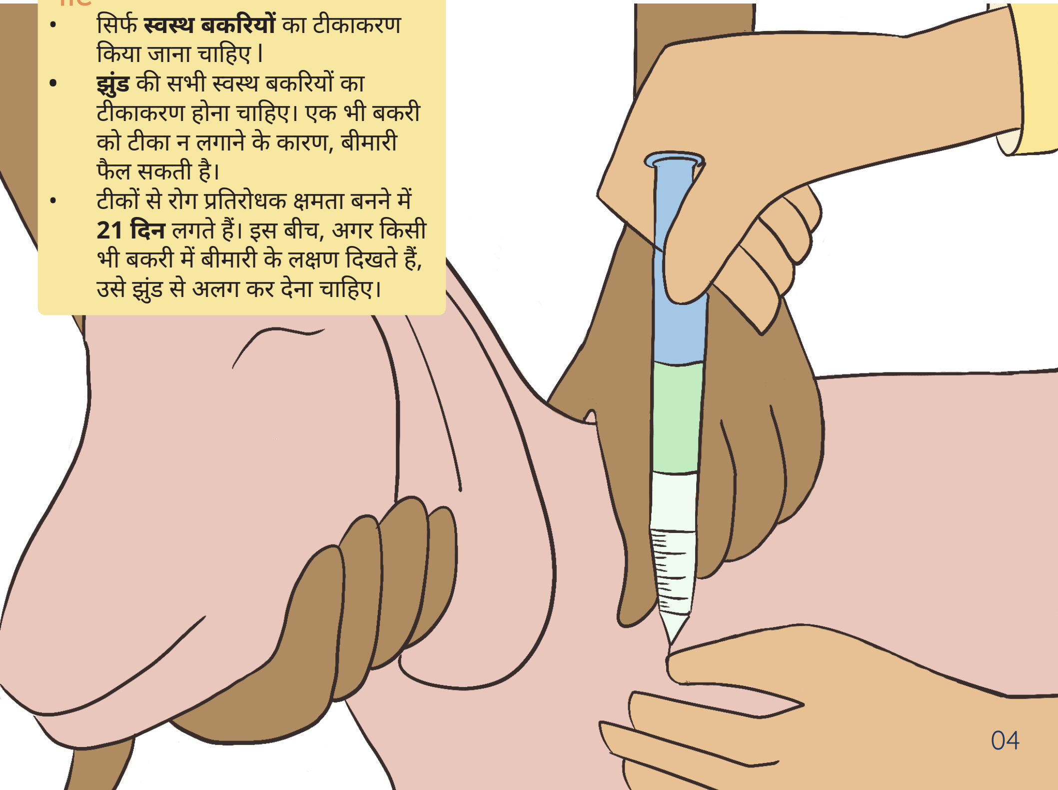

पीपीआर (पेस्टे दे पेटिट्स रुमीनेन्ट्स)

लक्षण

01 सुस्ती और भूख में कमी

02 बुखार

03 आँखों और नाक से पानी आना

04 मुंह में छाले

05 सांस लेने में मुश्किल, खांसी

06 बदबूदार दस्त

टीकाकरण शुरू करने के लिए बकरी की उम्र

3 महीने से अधिक होनी चाहिए

टीकाकरण समय-सरिणी

तीन साल में एक बार

जनवरी	अप्रैल	जुलाई	अक्टूबर
फरवरी	मई	अगस्त	नवंबर
मार्च	जून	सितंबर	दिसंबर

टीकाकरण अवधि

इस समय में बीमारियाँ होने की सबसे ज़्यादा संभावना रहती है

पॉक्स

लक्षण

01 तेज़ बुखार

02 पूरे शरीर में फुंसियां

03 सांस लेने में मुश्किल

04 सुस्ती

05 अवसाद

06 भूख न लगना

07 गर्भपात

08 पलकों पर सूजन

टीकाकरण शुरू करने के लिए बकरी की उम्र

3+

3 महीने से अधिक होनी चाहिए

टीकाकरण समय-सरिणी

साल में एक बार

जनवरी	अप्रैल	जुलाई	अक्टूबर
फरवरी	मई	अगस्त	नवंबर
मार्च	जून	सितंबर	दिसंबर

टीकाकरण अवधि

इस समय में बीमारियाँ होने की सबसे ज़्यादा संभावना रहती है

खुरपका-मूपका (एफएमडी - फुट एंड माउथ डिजीज)

लक्षण

01 जीभ या होंठ, मुंह के अंदर छाले

02 पैरों की उंगलियों, खुरो पे छाले और घाव

03 भूख न लगना

04 सुस्ती

05 चलने फिरने में दिक्कत

06 लार टपकना

07 बुखार

टीकाकरण शुरू करने के लिए बकरी की उम्र

3 महीने से अधिक होनी चाहिए

टीकाकरण समय-सरिणी

साल में दो बार

जनवरी	अप्रैल	जुलाई	अक्टूबर
फरवरी	मई	अगस्त	नवंबर
मार्च	जून	सितंबर	दिसंबर

- टीकाकरण अवधि
- इस समय में बीमारियाँ होने की सबसे ज़्यादा संभावना रहती है

एन्टेरोटोक्साईमिया (ईटीवी)

लक्षण

01 बदबूदार दस्त

02 सुस्त

03 पेट में दर्द और आफरा

04 पैरों को पटकना

05 सांस लेने में दिक्कत

टीकाकरण शुरू करने के लिए बकरी की उम्र

3 महीने से अधिक होनी चाहिए

टीकाकरण समय-सरिणी

साल में एक बार

जनवरी	अप्रैल	जुलाई	अक्टूबर
फरवरी	मई	अगस्त	नवंबर
मार्च	जून	सितंबर	दिसंबर

टीकाकरण अवधि

इस समय में बीमारियाँ होने की सबसे ज़्यादा संभावना रहती है

घर पर बंधी बकरियों का शेड

01. छत

- टिन की छत या घास-फूस का छप्पर।
- घर से लगा हुआ या किसी पेड़ के नीचे बनाया जा सकता है जहां सीधी धूप कम आती हो।

02. दीवारें

- लोहा या स्टील का जाल दो या दो से ज़्यादा तरफ़ हो जिससे की हवा आर-पार होती रहे और साफ़ हवा अंदर आती रहे।
- अगर ईंटों की/ घर की दीवार है, तो हर 2-3 महीने में एक बार चूने से पुताई करें - किनारों पर 3 फिट की ऊंचाई तक। इससे दीवारों पर काई नहीं जमती।

03. ज़मीन/ फर्श

- फर्श को कच्चा ही रखना चाहिए (पक्का फर्श या ईंट का फर्श ना रखें)।
- हर 15 दिन में चूना पाउडर छिड़कें।
- बकरियों का मल, अपशिष्ट रोज़ साफ़ करें ।
- एक तरफ़ ढलान होनी चाहिए जिससे कि बारिश का पानी या पेशाब बह जाए (इससे फुट खुरपका-मूपका रोकने में भी मदद मिलती है)।

घर पर बंधी बकरियों का शेड

04. चारा लटककर खिलाना

- इसे बकरियों के कद से 1.5 गुना ऊपर रखें। बकरियों को उचक कर खाना अच्छा लगता है - इससे उनका कद बढ़ता है।
- इस तार पर मिनरल ब्लॉक लटका सकते हैं।
- बकरियों को साफ़ चारा मिलता है।

05. चारा और दाना

- घास (जोवार, गेहूँ का भूसा) को एक इंच के आकार में काट लें (तूड़ा)।
- अतिरिक्त तैयारी: दस मिनट के लिए घास-नमक-घास-नमक-घास की परत बना कर छोड़ दें। इससे घास नरम हो जाती है और आसानी से पचती है।
- थोड़ी ऊँचाई पर बनाएँ जिससे कि मिट्टी या बकरी के मल या पेशाब से चारा खराब न हो। इससे चरने से पेट में कीड़े होने की संभावना कम होती है।

06. पानी

- हर सात दिन में एक बाल्टी पानी में आधा चम्मच हल्दी मिलकर बाड़े में रखना चाहिए। इसमें रोग रोधक गुण होते है।

अतिरिक्त पोषण के लिए घर पर आज़ोला उगाना

आज़ोला एक जलीय पत्ती या झालीया घास होती है जो पानी में उगती है।

लाभ

यह फॉसफोरस, कॅल्शियम, प्रोटीन, नाइट्रोजन का अच्छा स्त्रोत होता है। गर्मी के मौसम में या जब आसानी से चारा नहीं मिल पाता, उस समय यह खिलाने से चारे (जोवर, गेहू, चना और मूंगफली का भूसा) की ज़रूरत नहीं रहती।

01 पोषण का अच्छा स्त्रोत

02 दूध का उत्पादन बढ़ता है

03 हड्डियाँ मज़बूत होती हैं

घर पर आज़ोला कैसे उगाएँ

क्यारी बनाना

आप लीक न होने वाली पॉलीथीन-जैसी क्यारी खरीद सकते हैं।

कीमत: 10 फिट लंबाई, 4 फिट चौड़ाई और 1 फिट गहराई के लिए लगभग रु.1800।

एक क्यारी से लगभग 5-7 बकरियों को खिला सकते हैं।

इसे अंदर या बाहर बनाया जा सकता है जहां छाया हो, और सुरक्षित स्थान हो। *(ध्यान देना होगा कि कुत्ते या घूमते फिरते जानवर इस क्यारी तक न पहुँच सकें।)*

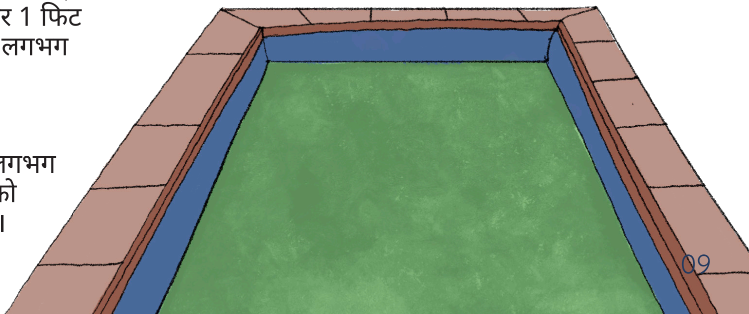

पानी/ माध्यम

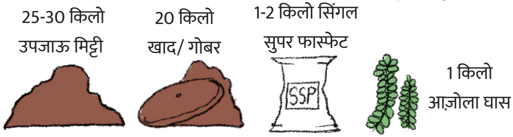

01 क्यारी में पानी भरें।

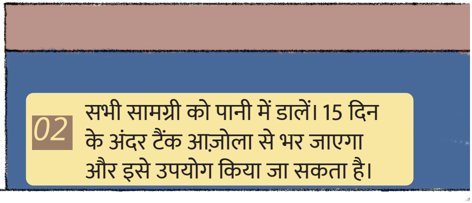

02 सभी सामग्री को पानी में डालें। 15 दिन के अंदर टैंक आज़ोला से भर जाएगा और इसे उपयोग किया जा सकता है।

Using Azolla

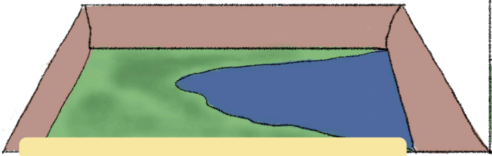

03 जितना आज़ोला चाहिए उतना निकाल कर दो से तीन बार उसे धो लें जिससे कि खाद, मिट्टी और फास्फेट की गंध चली जाए।

04 आधे घंटे तक आज़ोला को सूखने दें, इसे सीधे खिलाया जा सकता है या मिनरल मिश्रण या गेहूँ/बाजरा के साथ मिलाकर भी।

मौसमी निगरानी

1. बारिश के मौसम में आज़ोला की सबसे अच्छी उपज होती है।
2. सर्दियों में, ऊपर से हरा नेट लगा दें जिससे कि क्यारी के अंदर गर्माहट बढ़ जाए।

आवश्यकता

250 ग्राम आज़ोला प्रतिदिन (बकरियों की भूख के अनुसार ज़्यादा भी निकाल सकते हैं)

मिनरल ब्रिक कैसे बनाये ?

लाभ

इन ब्लॉक में नमक, केलशियम होता है जो बकरी के स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में उपयोगी होते हैं।

01
बकरी की भूख बढ़ती है

02
रोग रोधक क्षमता बेहतर होती है

03
हड्डियाँ और मांसपेशियाँ मज़बूत होती हैं - बकरी का आकार बढ़ता है

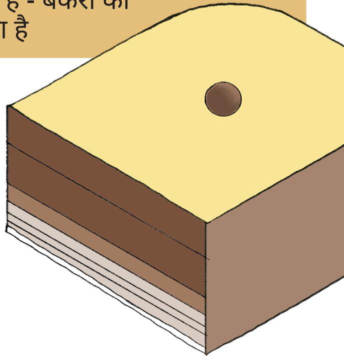

सामग्री

प्रत्येक 1 किलो	चिकनी मिटटी
	नमक
150-200 ग्राम	गेहूँ का भूसा/ चोकर
100 ग्राम	काला नमक
	मुल्तानी मिट्टी
	गुड़ (सर्दियों में/ ठंड के समय में ही)
3 ग्राम	चूना

अगर एक बाड़े में **5-6** बकरियाँ हैं
तो हर **15** दिन में
3 ब्लॉक लगेंगे

प्रक्रिया

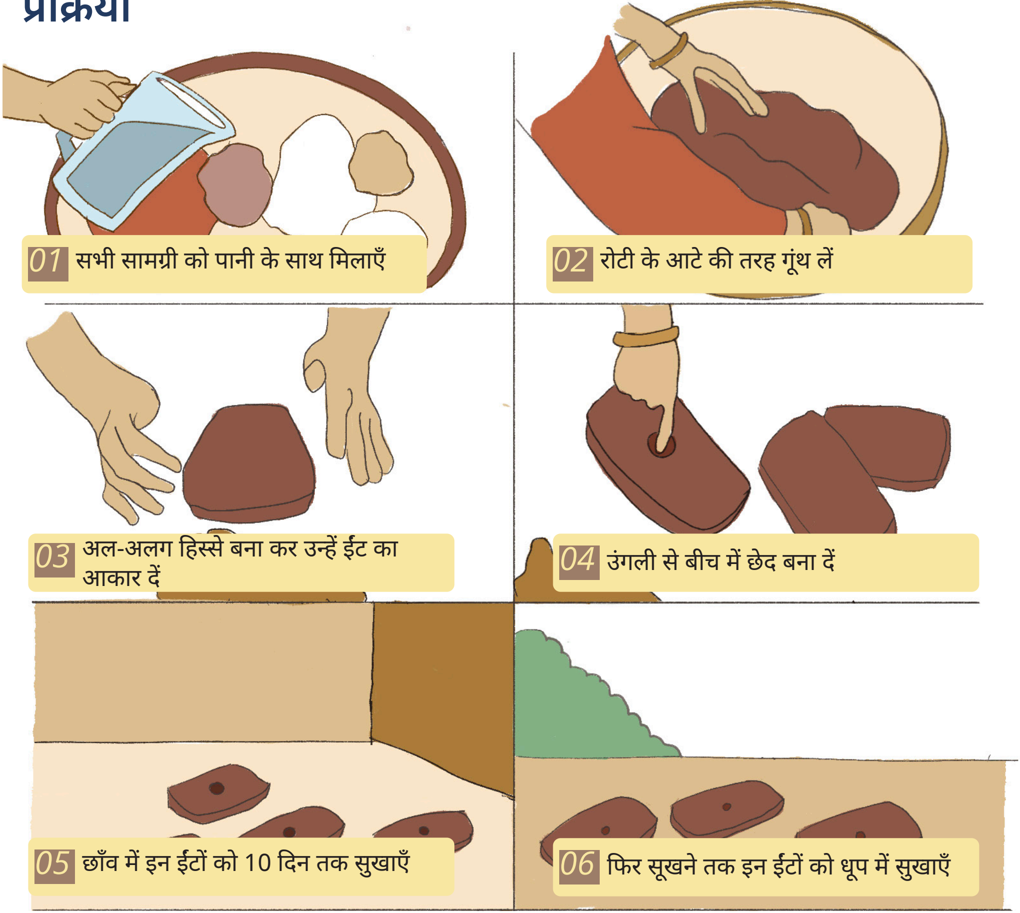
01 सभी सामग्री को पानी के साथ मिलाएँ
02 रोटी के आटे की तरह गूंथ लें
03 अल-अलग हिस्से बना कर उन्हें ईंट का आकार दें
04 उंगली से बीच में छेद बना दें
05 छाँव में इन ईंटों को 10 दिन तक सुखाएँ
06 फिर सूखने तक इन ईंटों को धूप में सुखाएँ

07 ब्रिक सख्त होनी चाहिए

संपर्क

श्योराम योगी
पशुपालन विशेषज्ञ, इब्तदा, 9549876556

AXIS BANK FOUNDATION
WELL LABS
WATER · ENVIRONMENT · LAND · LIVELIHOODS
Ibtada the beginning
शुरुआत ... इब्तिदा